

# DAILY CURRENT AFFAIRS



26 April 2025



UPSC (IAS/PCS) AND ALL  
COMPITETIVE EXAM



ABHAY SIR

01

डॉ. के. करतूरीरंगन का निधन

02

क्लोरपिरीफोस पर प्रतिबंध की माँग तेज, जिनेवा समिट से पहले भारतीय विशेषज्ञों की अपील

03

विश्व बौद्धिक संपदा दिवस 2025

04

विश्व टीकाकरण सप्ताह

05

सीताकली लोक कला

06

मेहरगढ़



डॉ. के. कस्तूरिंगन का निधन



### ISRO के पूर्व प्रमुख डॉ. के. कस्तूरीरंगन का निधन

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन का शुक्रवार सुबह निधन हो गया।
- वे 84 वर्ष के थे और बेंगलुरु स्थित अपने आवास पर अंतिम सांस ली।
- डॉ. कस्तूरीरंगन की पार्थिव देह को 27 अप्रैल को अंतिम दर्शन के लिए रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट (RRI) में रखा जाएगा।



## डॉ. के. कस्तूरिंगन का निधन



## Daily Current News

- उन्हें दो वर्ष पूर्व दिल का दौरा पड़ा था, जिसके बाद से वे अस्वस्थ चल रहे थे।
- वर्ष 1994 से 2003 तक ISRO का नेतृत्व करने वाले कस्तूरिंगन के कार्यकाल में भारत ने कई प्रमुख अंतरिक्ष मिशनों की योजना बनाई, जिनमें चंद्रयान मिशन की नींव भी शामिल है।
- इसके अतिरिक्त, वे नई शिक्षा नीति (NEP) का प्रारूप तैयार करने वाली समिति के अध्यक्ष भी थे।





## डॉ. के. कस्तूरिंगन का बहुआयामी योगदान

- डॉ. के. कस्तूरिंगन ने विज्ञान, शिक्षा और नीति निर्माण के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- वे यूपीए सरकार के कार्यकाल में योजना आयोग के सदस्य रहे और नीति निर्माण में सक्रिय योगदान दिया।
- उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) के चांसलर और कर्नाटक नॉलेज कमीशन के अध्यक्ष के रूप में भी सेवाएं दीं।





- वर्ष 2003 से 2009 तक वे राज्यसभा के सदस्य रहे और इस दौरान विभिन्न राष्ट्रीय नीतिगत चर्चाओं में भाग लिया।
- डॉ. कस्तूरिंगन 2004 से 2009 तक बंगलुरु स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज (NIAS) के निदेशक भी रहे।
- उन्होंने केंद्र सरकार की कई उच्चस्तरीय समितियों का नेतृत्व किया और उच्च शिक्षा, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, और पर्यावरण जैसे विषयों पर सरकार को सलाह दी।





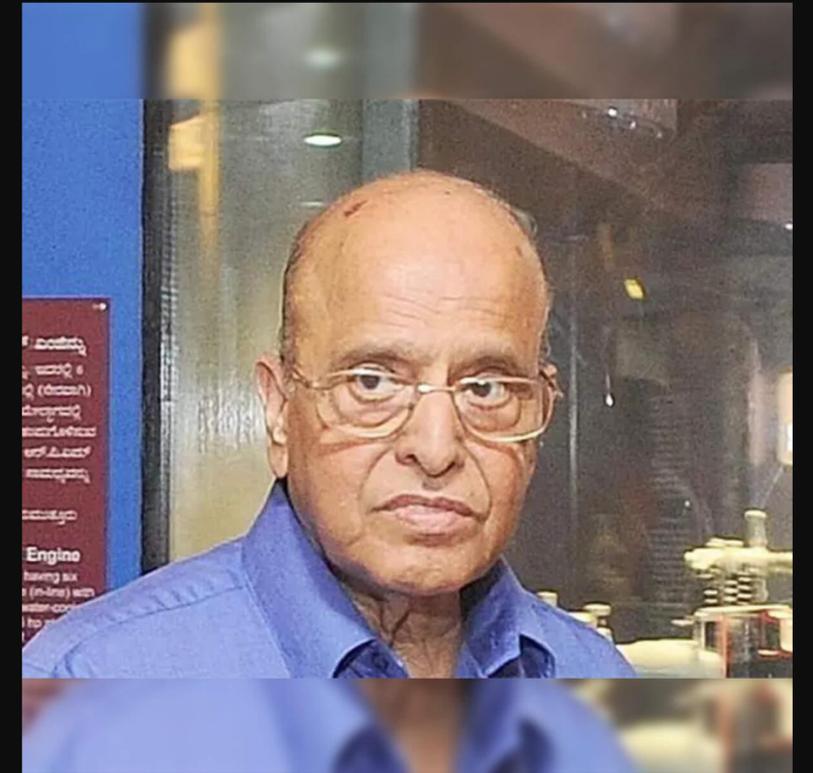
## डॉ. के. कस्तूरिंगन: भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में अग्रणी योगदान

- डॉ. के. कस्तूरिंगन ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) में अपने लंबे करियर के दौरान कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाईं।
- ISRO प्रमुख बनने से पहले, वे इसरो सैटेलाइट सेंटर के निदेशक थे, जहाँ उन्होंने INSAT-2 श्रृंखला, IRS-1A और IRS-1B जैसे प्रारंभिक रिमोट सेंसिंग उपग्रहों के विकास और प्रक्षेपण का नेतृत्व किया।





- वे भारत के पहले दो एक्सपेरिमेंटल अर्थ ऑर्जर्वेशन सैटेलाइट—भास्कर-1 और भास्कर-2—के भी प्रोजेक्ट डायरेक्टर रहे।
- 1994 में ISRO प्रमुख बनने के बाद, उनके नेतृत्व में भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कीं।
- इस दौरान पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV) का नियमित उपयोग शुरू हुआ और जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (GSLV) का पहला सफल परीक्षण हुआ।





- उनके कार्यकाल में ही IRS-1C और IRS-1D, जिन्हें विश्व के अग्रणी सिविलियन रिमोट सेंसिंग उपग्रहों में गिना जाता है, का डिज़ाइन और प्रक्षेपण हुआ।
- इसके साथ ही INSAT की दूसरी और तीसरी पीढ़ी के उपग्रह, तथा महासागरीय निगरानी के लिए IRS-P3 और IRS-P4 जैसे मिशन भी सफलतापूर्वक लॉन्च किए गए।



**प्रश्न: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

- 1. डॉ. के. कस्तूरिंगन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के पूर्व अध्यक्ष रह चुके हैं।
- 2. उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 का प्रारूप तैयार करने वाली समिति की अध्यक्षता की थी।
- 3. वे भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG) पद पर भी कार्य कर चुके हैं।

**उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?**

- (A) केवल 1 और 2
- B) केवल 2 और 3
- C) केवल 1 और 3
- D) 1, 2 और 3

### **व्याख्या:**

- कथन 1 सही है: डॉ. कस्तूरीरंगन ISRO के अध्यक्ष रह चुके हैं।
- कथन 2 सही है: उन्होंने NEP 2020 का ड्राफ्ट तैयार करने वाली समिति की अध्यक्षता की थी।
- कथन 3 गलत है: वे CAG नहीं रहे हैं।



क्लोरपिरिफोस पर प्रतिबंध की माँग तेज, जिनेवा समिट से पहले  
भारतीय विशेषज्ञों की अपील





- 28 अप्रैल 2025 से स्विट्जरलैंड के जिनेवा में शुरू हो रहे रसायन सुरक्षा सम्मेलन (Chemical Safety Summit) से पहले भारत के वैज्ञानिकों और पर्यावरण विशेषज्ञों ने क्लोरपिрифोस जैसे विषैले कीटनाशकों पर तत्काल प्रतिबंध लगाने की माँग की है।
- यह रसायन अभी भी भारत में व्यापक रूप से उपयोग में है, जबकि 40 से अधिक देशों में इसे पहले ही प्रतिबंधित किया जा चुका है।

**CHEMICAL SECURITY SUMMIT**  
August 29, 2023

**State of Chemical Security**

Kelly Murray  
Associate Director  
CISA Chemical Security

#ChemicalSecurity



- इस सम्मेलन में बेसल, रोट्टरडम और स्टॉकहोम कन्वेंशन (BRS COP) के अंतर्गत तीन प्रमुख बहुपक्षीय पर्यावरणीय बैठकें आयोजित होंगी, जो 28 अप्रैल से 9 मई 2025 तक चलेंगी।
- इन सम्मेलनों का उद्देश्य पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य को खतरनाक रसायनों और कचरे से सुरक्षित रखना है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने क्लोरपिрифोस को "मध्यम स्तर का खतरनाक रसायन" घोषित किया है।



## क्लोरपिरिफोस पर प्रतिबंध



## Daily Current News

- भारत में इसका उपयोग कई प्रकार की फसलों पर किया जाता है, जिससे किसानों, उपभोक्ताओं, बच्चों और पारिस्थितिकी तंत्र को गंभीर खतरे का सामना करना पड़ता है।
- पेस्टीसाइड एक्शन नेटवर्क (PAN) इंडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ए.डी. दिलीप कुमार ने सम्मेलन से पहले कहा कि अब समय आ गया है कि इस मुद्दे पर निर्णायक और ठोस कदम उठाए जाएं।





- PAN इंडिया ने रोटरडम कन्वेंशन के तहत क्लोरपिरिफोस को उस सूची में डालने की सिफारिश की है, जिसमें किसी रसायन के अंतरराष्ट्रीय व्यापार से पहले उसकी जानकारी देना और सहमति लेना जरूरी होता है (अनुच्छेद III)।
- साथ ही, संगठन ने स्टॉकहोम कन्वेंशन के तहत इसे ऐसी सूची में डालने की मांग की है, जिसमें शामिल रसायनों पर वैश्विक प्रतिबंध होता है (अनुच्छेद A)।





- हालांकि, भारत में अभी भी 18 फसलों पर क्लोरपिरिफोस के इस्तेमाल की अनुमति है। 2022 की एक रिपोर्ट में यह सामने आया था कि भारत में कई खतरनाक रसायनों का बिना अनुमति और अवैध तरीके से इस्तेमाल हो रहा है।
- स्टॉकहोम कन्वेंशन, जिसे 2001 में लागू किया गया था, का मकसद उन रसायनों को खत्म करना है जो लंबे समय तक पर्यावरण में बने रहते हैं, जीवों के शरीर में जमा हो जाते हैं और सेहत को गंभीर नुकसान पहुंचाते हैं।





- इस साल जिनेवा में होने वाले सम्मेलन में सिर्फ क्लोरपिрифोस ही नहीं, बल्कि पैरा-क्वाट, एसीटोक्लोरो, कार्बोसल्फान, मेथिल ब्रोमाइड जैसे अन्य कीटनाशकों को भी चर्चा में लाया जाएगा।
- इसका उद्देश्य खतरनाक रसायनों के व्यापार में पारदर्शिता और जिम्मेदारी बढ़ाना है।
- आंकड़ों से साफ है कि दुनियाभर में 568 खतरनाक कीटनाशकों को किसी न किसी देश ने प्रतिबंधित किया है, लेकिन इनमें से कई भारत में अब भी इस्तेमाल हो रहे हैं।





- विशेषज्ञों का मानना है कि भारत को अपनी नीतियाँ सुधारनी होंगी और वैश्विक मानकों के अनुरूप कदम उठाने होंगे।
- क्लोरपिरिफोस एक विषैला (जहरीला) कीटनाशक है जो कई तरह की फसलों पर कीड़ों को मारने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।
- इसे 1970 के दशक में विकसित किया गया था और तब से इसका व्यापक उपयोग हुआ है। हालांकि, अब यह कीटनाशक मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए खतरनाक माना जा रहा है।





### क्लोरपिरिफोस से जुड़ी मुख्य बातें:

- स्वास्थ्य पर असर: यह बच्चों के मस्तिष्क विकास को नुकसान पहुंचा सकता है। यह न्यूरोटॉक्सिन है यानी यह तंत्रिका तंत्र (nervous system) को प्रभावित करता है।
- प्रजनन पर प्रभाव: यह प्रजनन प्रणाली को भी नुकसान पहुंचा सकता है।





- पर्यावरणीय खतरा: इसकी रासायनिक संरचना ऐसी है कि यह हवा और पानी के माध्यम से दूर-दराज के इलाकों में भी पहुँच सकता है और वहाँ की पारिस्थितिकी को प्रभावित कर सकता है।
- वैश्विक स्थिति: 40 से अधिक देशों में यह प्रतिबंधित या सीमित किया जा चुका है — जैसे अमेरिका, यूरोपीय संघ, कनाडा आदि।
- भारत में स्थिति: अभी भी इसका इस्तेमाल 18 से अधिक फसलों में होता है, हालांकि इस पर प्रतिबंध लगाने की माँग लगातार बढ़ रही है।





## वैज्ञानिक क्या कहते हैं?

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने इसे "मध्यम स्तर का खतरनाक रसायन" बताया है।
- कई रिसर्च में यह पाया गया है कि इसका संपर्क छोटे बच्चों, गर्भवती महिलाओं और किसानों के लिए विशेष रूप से हानिकारक है।



World Health Organization





## विकल्प क्या हैं?

- जैविक कीटनाशक (bio-pesticides)
- Integrated Pest Management (IPM)
- फसल चक्र परिवर्तन (crop rotation)
- नेमाटोड, ट्राइकोडर्मा जैसे लाभकारी सूक्ष्मजीव





- भारत में कई ऐसे विषैले (खतरनाक) कीटनाशक (pesticides) हैं जिनका उपयोग खेती में किया जाता है, हालांकि इनमें से कुछ पर अन्य देशों में प्रतिबंध लगाया जा चुका है।
- लेकिन भारत में ये अब भी कई फसलों पर प्रयोग किए जा रहे हैं। नीचे ऐसे प्रमुख कीटनाशकों की सूची दी गई है:

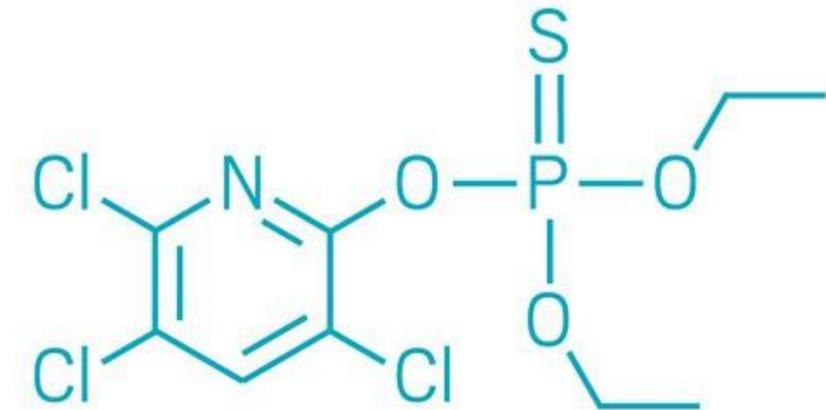




**भारत में इस्तेमाल होने वाले प्रमुख विषैले कीटनाशक:**

## 1. क्लोरपिरिफोस (Chlorpyrifos)

- खतरा: बच्चों के मस्तिष्क विकास पर असर, न्यूरोटॉक्सिक, प्रजनन प्रणाली को नुकसान
- स्थिति: 40+ देशों में प्रतिबंधित, भारत में अब भी प्रयोग



**Chlorpyrifos**



## 2. पैरा-क्वाट (Paraquat)

- खतरा: फेफड़ों को गंभीर क्षति, कोई हार्मोन विष नहीं है
- स्थिति: 60+ देशों में प्रतिबंधित, भारत में उपयोग की अनुमति

## 3. एसीटोक्लोरो (Acetochlor)

- खतरा: त्वचा और आंखों में जलन, संभावित कैंसर कारक
- स्थिति: कुछ देशों में सीमित, भारत में अनुमति





## 4. मेथिल ब्रोमाइड (Methyl Bromide)

- स्वतंत्रता: ओज़ोन परत को नुकसान, तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव
- स्थिति: स्टॉकहोम कन्वेंशन के तहत चरणबद्ध रोक, भारत में सीमित प्रयोग

## 5. फेन्थोइन (Phenthoiin)

- स्वतंत्रता: तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है
- स्थिति: कुछ देशों में प्रतिबंधित



## 6. कार्बोसल्फान (Carbosulfan)

- खतरा: कीटनाशक जहरीलेपन से जुड़ी मौतों के लिए जिम्मेदार
- स्थिति: यूरोप में प्रतिबंधित, भारत में प्रयोग

## 7. डाइक्लोरोवोस (Dichlorvos)

- खतरा: तंत्रिका तंत्र पर असर, कैंसर का खतरा
- स्थिति: कई देशों में प्रतिबंधित





## 8. एंडोसल्फान (Endosulfan)

- स्वतरा: हार्मोन असंतुलन, जन्म दोष
- स्थिति: भारत में 2011 में प्रतिबंधित (केरल के कासरगोड में गंभीर असर के बाद)



**प्रश्न: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

- 1. SCORE रिपोर्ट भारत सरकार द्वारा कीटनाशकों के अवैध उपयोग और उनके नियमन की स्थिति पर जारी की जाती है।
- 2. इस रिपोर्ट में राज्यों द्वारा कीटनाशकों की गुणवत्ता, लाइसेंसिंग और अवैध बिक्री पर निगरानी की स्थिति का मूल्यांकन किया जाता है।
- 3. भारत सरकार ने अब तक किसी भी विषैले कीटनाशक को प्रतिबंधित नहीं किया है।

**उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?**

- A) केवल 1 और 2
- B) केवल 2 और 3
- C) केवल 1 और 3
- D) 1, 2 और 3

## व्याख्या:

- कथन 1 सही है: SCORE रिपोर्ट कीटनाशकों के नियमन और अनुपालन पर केंद्रित एक रिपोर्ट है।
- कथन 2 सही है: यह राज्यों की निगरानी और कार्यान्वयन की गुणवत्ता पर मूल्यांकन करती है।
- कथन 3 गलत है: भारत में कई विषैले कीटनाशकों को प्रतिबंधित किया जा चुका है, जैसे एंडोसल्फान



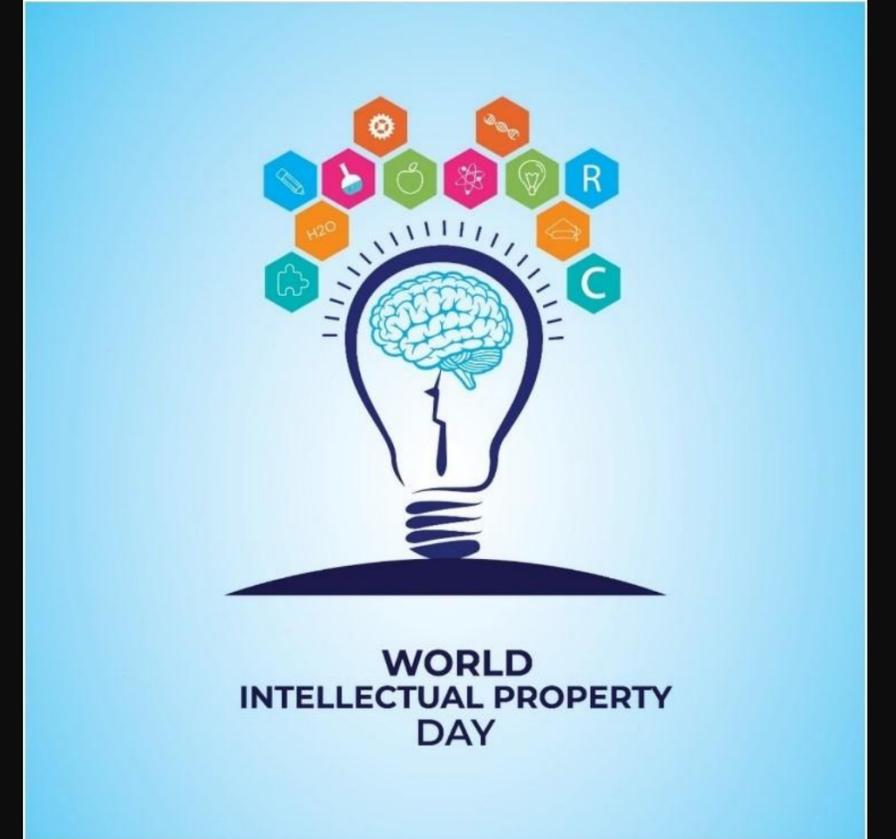
# WORLD INTELLECTUAL PROPERTY DAY



विश्व बौद्धिक संपदा दिवस 2025



- हर साल 26 अप्रैल को विश्व बौद्धिक संपदा दिवस मनाया जाता है।
- यह दिन नवाचार और रचनात्मकता को प्रोत्साहन देने में बौद्धिक संपदा (Intellectual Property - IP) की भूमिका पर प्रकाश डालता है।
- इस दिवस की शुरुआत विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) ने वर्ष 2000 में की थी, ताकि आम लोगों को यह समझाया जा सके कि पेटेंट, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट और अन्य आईपी अधिकार हमारे समाज और अर्थव्यवस्था पर कितना गहरा प्रभाव डालते हैं।





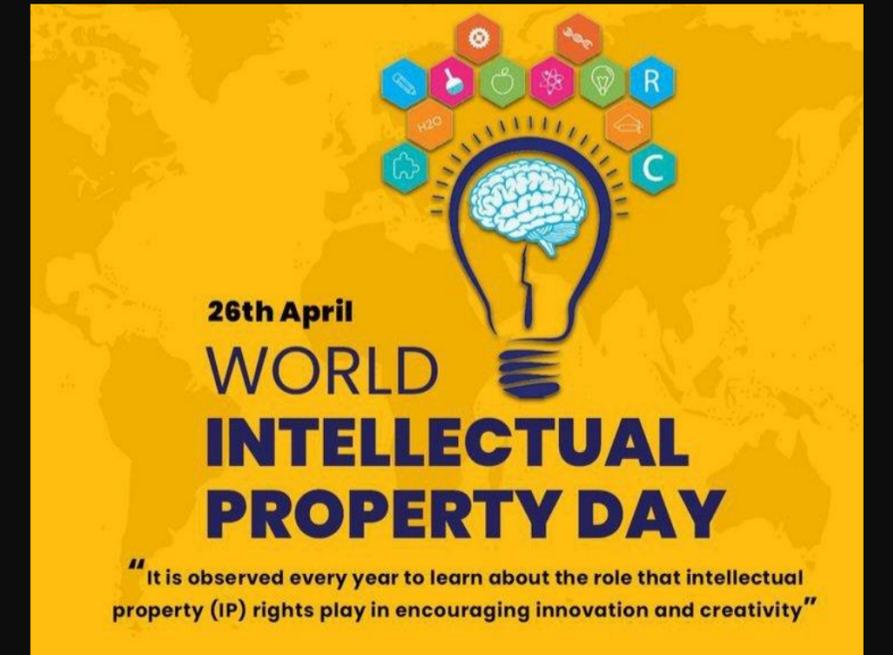
- यह दिवस इस बात पर भी बल देता है कि कैसे बौद्धिक संपदा अधिकार रचनात्मक काय की सुरक्षा कर उन्हें आगे बढ़ाने में मदद करते हैं।
- **2025 की थीम**:- संगीत और आईपी: रचनात्मकता का जश्न मनाना"





## बौद्धिक संपदा क्या है?

- बौद्धिक संपदा (Intellectual Property या IP) उन विचारों और रचनाओं को कहते हैं जो किसी व्यक्ति के दिमाग की उपज होती हैं। इसमें आविष्कार, किताबें, चित्र, संगीत, डिजाइन, लोगो, ब्रांड नाम और व्यापार में इस्तेमाल होने वाले चिन्ह शामिल होते हैं।
- कानून के ज़रिए इन रचनाओं की सुरक्षा की जाती है ताकि उनके निर्माता को उनके काम का उचित श्रेय और आर्थिक लाभ मिल सके।





**बौद्धिक संपदा मुख्यतः इन श्रेणियों में बाँटी जाती है:**

### **1. पेटेंट (Patent):**

- पेटेंट एक विशेष अधिकार है जो किसी नए आविष्कार के लिए सरकार द्वारा आविष्कारक को दिया जाता है।
- यह अधिकार किसी तकनीकी आविष्कार को एक निश्चित समय तक दूसरों द्वारा बिना अनुमति उपयोग करने से रोकता है।





## 2. ट्रेडमार्क (Trademark):

- ट्रेडमार्क किसी कंपनी या उत्पाद की पहचान का प्रतीक होता है, जैसे नाम, लोगो, चिन्ह या स्लोगन।
- यह दूसरों को वही या मिलता-जुलता नाम/चिन्ह उपयोग करने से रोकता है, जिससे उपभोक्ताओं को भ्रम न हो।





### 3. कॉपीराइट (Copyright):

- कॉपीराइट रचनात्मक काय जैसे किताबें, संगीत, फिल्म, सॉफ्टवेयर, चित्र आदि पर रचनाकार का कानूनी अधिकार होता है।
- यह अधिकार यह सुनिश्चित करता है कि बिना अनुमति कोई दूसरा उस रचना की नकल या उपयोग न करे।





#### 4. औद्योगिक डिजाइन (Industrial Design):

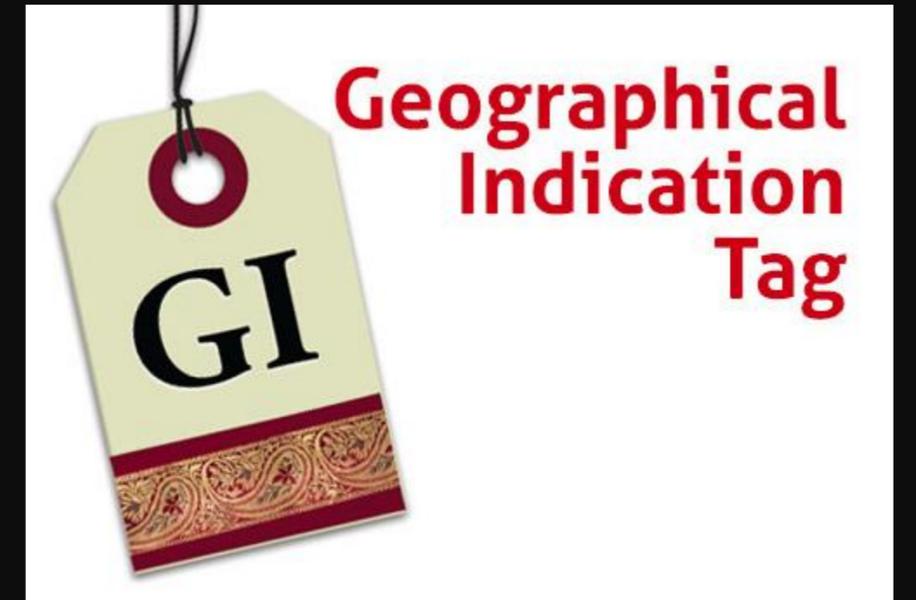
- यह किसी उत्पाद की बाहरी बनावट या सौंदर्यात्मक रूप, जैसे उसका आकार, रंग, पैटर्न आदि की सुरक्षा करता है।
- उदाहरण: मोबाइल फोन का अनोखा डिजाइन।





## 5. भौगोलिक संकेत (Geographical Indication - GI):

- यह संकेत दर्शाता है कि कोई उत्पाद किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र से संबंधित है और उसकी गुणवत्ता, प्रतिष्ठा या विशेषता उस स्थान की वजह से है।
- उदाहरण: दरजीलिंग चाय, बनारसी साड़ी।



**प्रश्न: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

- 1. भारत में बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPR) का प्रशासन वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत आता है।
- 2. भारत सरकार ने राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा अधिकार नीति (National IPR Policy) को पहली बार 2016 में लागू किया था।
- 3. ट्रेडमार्क, पेटेंट और कॉपीराइट सभी के लिए एक ही सरकारी कार्यालय होता है।

**उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?**

- A) केवल 1 और 2
- B) केवल 2 और 3
- C) केवल 1 और 3
- D) 1, 2 और 3

### **व्याख्या:**

- कथन 1 सही है IPR का प्रशासन वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, विशेष रूप से औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग (DPIIT) के अधीन है।
- कथन 2 सही है: भारत की पहली राष्ट्रीय IPR नीति 2016 में आई थी, जिससे नवाचार और स्टार्टअप को बढ़ावा देने का लक्ष्य था।
- कथन 3 गलत है: ट्रेडमार्क, पेटेंट और कॉपीराइट के लिए अलग-अलग रजिस्ट्रार/कार्यालय होते हैं जैसे कॉपीराइट का कार्य सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन आता है।



**WORLD  
IMMUNIZATION  
DAY**  
*OF CELEBRATION DAY*

**विश्व टीकाकरण सप्ताह**



- टीकाकरण: एक वरदान जो अब खतरे में है
- विश्व टीकाकरण सप्ताह (World Immunization Week) –
- परिचय:
- विश्व टीकाकरण सप्ताह हर साल 24 से 30 अप्रैल के बीच मनाया जाता है। इसका उद्देश्य लोगों को टीकों के महत्व के बारे में जागरूक करना और यह सुनिश्चित करना है कि सभी को समय पर और आवश्यक टीके मिलें।





- **थीम 2024:**
- "Humanly Possible: Immunization for All"
- (हूमनली पॉसिबल: सभी के लिए टीकाकरण)
- **मुख्य बिंदु:**
- **1. आयोजनकर्ता संगठन:**
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
- यूनिसेफ
- GAVI (वैक्सीन अलायंस)
- अन्य वैश्विक स्वास्थ्य साझेदार



**World Health  
Organization**



- **2. महत्व:**
  - हर साल टीकों की मदद से 14 से अधिक बीमारियों से लगभग 42 लाख लोगों की जान बचाई जाती है।
  - टीके बचपन, किशोरावस्था और वयस्कता में गंभीर बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करते हैं।
- **4. वर्तमान स्थिति (2024):**
  - खसरा के मामलों में 2023 में 20% की वृद्धि हुई।
  - मेनिनजाइटिस और पीले बुखार जैसे रोग फिर से उभर रहे हैं।
  - लगभग 1.45 करोड़ बच्चों को एक भी नियमित टीका नहीं मिल सका।





- **5. प्रगति के संकेत:**
- मेनिनजाइटिस A का कुछ क्षेत्रों से सफाया
- मलेरिया और HPV जैसी बीमारियों के लिए नए टीकों का विस्तार
- HPV वैक्सीन की कवरेज 21% से बढ़कर 40% (2020-2023)





- टीके (वैक्सीन) किसी वरदान से कम नहीं हैं।
- पिछले 50 सालों में इनकी मदद से दुनिया भर में 15 करोड़ से ज्यादा जिंदगियां बचाई गई हैं।
- लेकिन अब यह सफलता खतरे में है।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने चेतावनी दी है कि टीकाकरण के लिए मिलने वाली वैश्विक फंडिंग में कमी आने लगी है।





- इससे कई ऐसी बीमारियां फिर से लौट रही हैं, जिन्हें पहले लगभग खत्म कर दिया गया था।
- विश्व टीकाकरण सप्ताह (24-30 अप्रैल) के मौके पर WHO, यूनिसेफ और वैक्सीन अलायंस गावी ने बताया कि टीकों को लेकर फैली गलत जानकारियाँ, बढ़ती आबादी, युद्ध-संकट और फंडिंग में कटौती की वजह से टीकाकरण अभियान धीमा हो गया है।

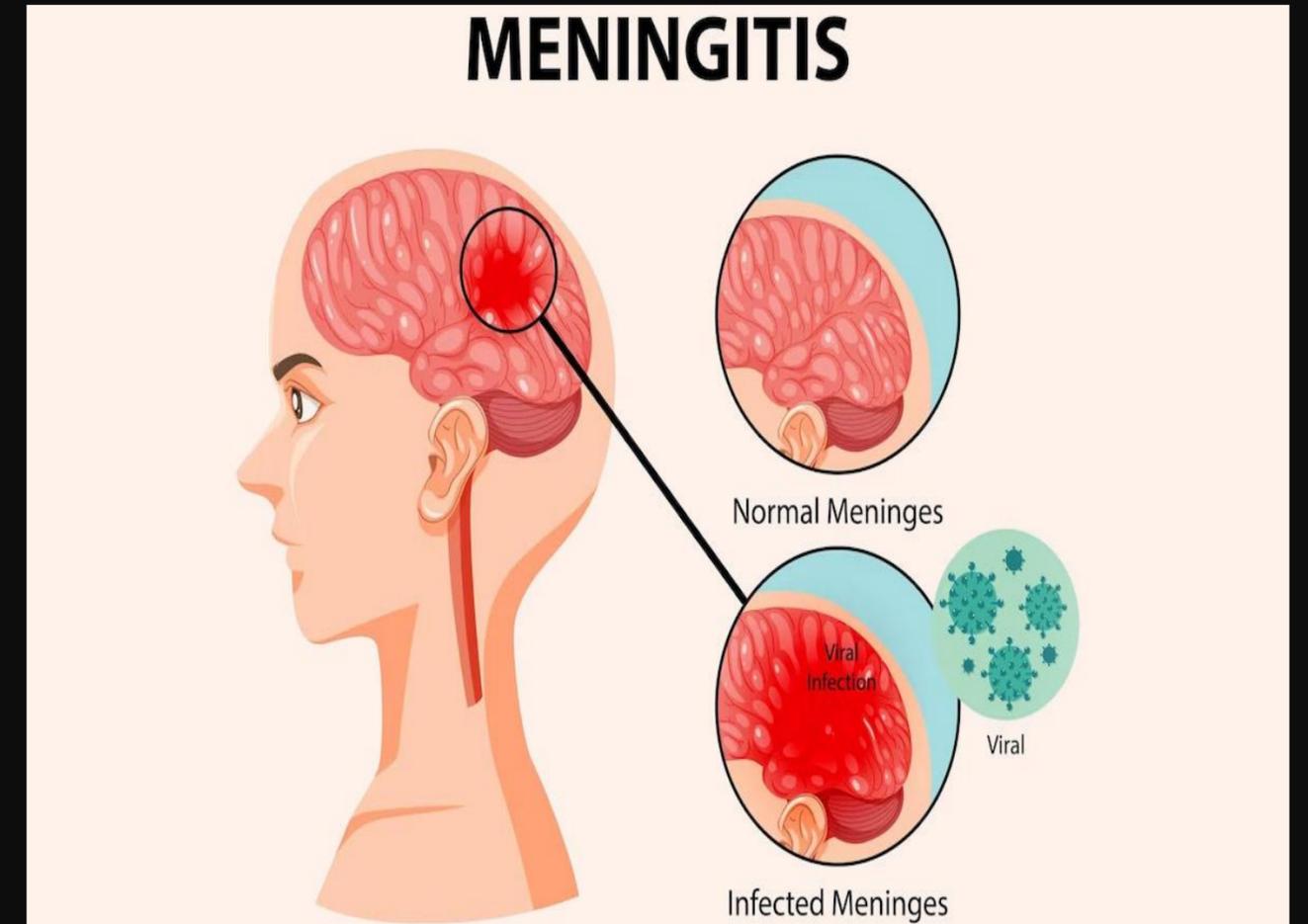




- इसका सीधा असर बच्चों, किशोरों और वयस्कों पर पड़ रहा है, जिनमें संक्रमण का खतरा तेजी से बढ़ रहा है।
- **फिर लौट रही हैं खतरनाक बीमारियाँ**
- खसरा, मेनिनजाइटिस और पीले बुखार जैसे रोग अब फिर से तेजी से फैल रहे हैं। ये वे बीमारियाँ हैं जिन्हें रोका जा सकता है, बस समय पर टीके लगवाने की जरूरत है।



- **खसरा:** 2023 में इसके एक करोड़ से ज्यादा मामले सामने आए, जो 2022 के मुकाबले 20% ज्यादा हैं।
- **मेनिनजाइटिस:** अफ्रीकी देशों में इस बीमारी के 2024 के शुरुआती तीन महीनों में 5,500 से ज्यादा मामले और 300 मौतें दर्ज हुईं।





- **पीला बुखार:** अफ्रीका और अमेरिका में इसके मामले बढ़ने लगे हैं।
- इन बीमारियों से निपटने के लिए बनी रणनीतियों को बड़ा झटका लगा है।





- **स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ा असर**
- फंडिंग की कमी का असर सीधे उन देशों पर पड़ा है जहां पहले से ही स्वास्थ्य सेवाएं कमजोर थीं।
- WHO की रिपोर्ट बताती है कि 108 देशों में टीकाकरण अभियान और दवाओं की आपूर्ति प्रभावित हुई है।
- टीकों से रोकी जा सकने वाली बीमारियों की निगरानी भी कमजोर हो गई है।



**World Health  
Organization**





- **छूट रहे हैं बच्चे**
- कोरोना महामारी के बाद से कई बच्चे नियमित टीके नहीं लगवा पाए हैं।
- 2023 में करीब 1.45 करोड़ बच्चे ऐसे थे जिन्हें एक भी नियमित टीका नहीं मिला।
- इनमें से आधे से ज्यादा बच्चे ऐसे देशों में रहते हैं जहां हिंसा और संघर्ष ने स्वास्थ्य व्यवस्था को कमजोर कर दिया है।





- यूनिसेफ प्रमुख कैथरीन रसेल ने चिंता जताई है कि हम आज भी करोड़ों बच्चों तक खसरे का टीका नहीं पहुंचा पा रहे हैं, जैसी स्थिति कोरोना काल में बनी थी।
- **कुछ उम्मीदें भी हैं**
- मुश्किलों के बावजूद कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जहां टीकाकरण के अच्छे नतीजे देखने को मिल रहे हैं:
- अफ्रीका में मेनिनजाइटिस ए का लगभग सफाया हो चुका है। एक नई वैक्सीन इसके पांच प्रकारों से सुरक्षा देती है।





- एचपीवी वैक्सीन की कवरेज 2020 में 21% से बढ़कर 2023 में 40% हो गई है, जिससे सर्वाङ्कल कैंसर के खिलाफ लड़ाई को ताकत मिली है।
- पीले बुखार के मामले और मौतें टीकाकरण की मदद से पहले काफी कम हो चुके थे।





- मलेरिया वैक्सीन अब 20 अफ्रीकी देशों में शुरू हो गई है, जिससे 2035 तक 5 लाख जानें बचाई जा सकती हैं।
- हर साल टीके लगभग 14 बीमारियों से 42 लाख जानें बचाते हैं, जिनमें से आधी से ज्यादा अफ्रीका में होती हैं।



- **सरकारों से अपील**
- स्वास्थ्य एजेंसियों ने दुनियाभर की सरकारों से अपील की है कि वे टीकाकरण कार्यक्रमों में लगातार निवेश करें।
- यदि अभी ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो बीते 50 वर्ष की मेहनत और बच्चों की सुरक्षा को खतरा हो सकता है।





- **विश्व टीकाकरण सप्ताह (World Immunization Week) –**
- **परिचय:** विश्व टीकाकरण सप्ताह हर साल 24 से 30 अप्रैल के बीच मनाया जाता है।
- इसका उद्देश्य लोगों को टीकों के महत्व के बारे में जागरूक करना और यह सुनिश्चित करना है कि सभी को समय पर और आवश्यक टीके मिलें।





- **थीम 2024:**
- "Humanly Possible: Immunization for All"
- (हूमनली पॉसिबल: सभी के लिए टीकाकरण)
- **मुख्य बिंदु**
- 1. आयोजनकर्ता संगठन:
- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
- यूनिसेफ
- GAVI (वैक्सीन अलायंस)
- अन्य वैश्विक स्वास्थ्य साझेदार



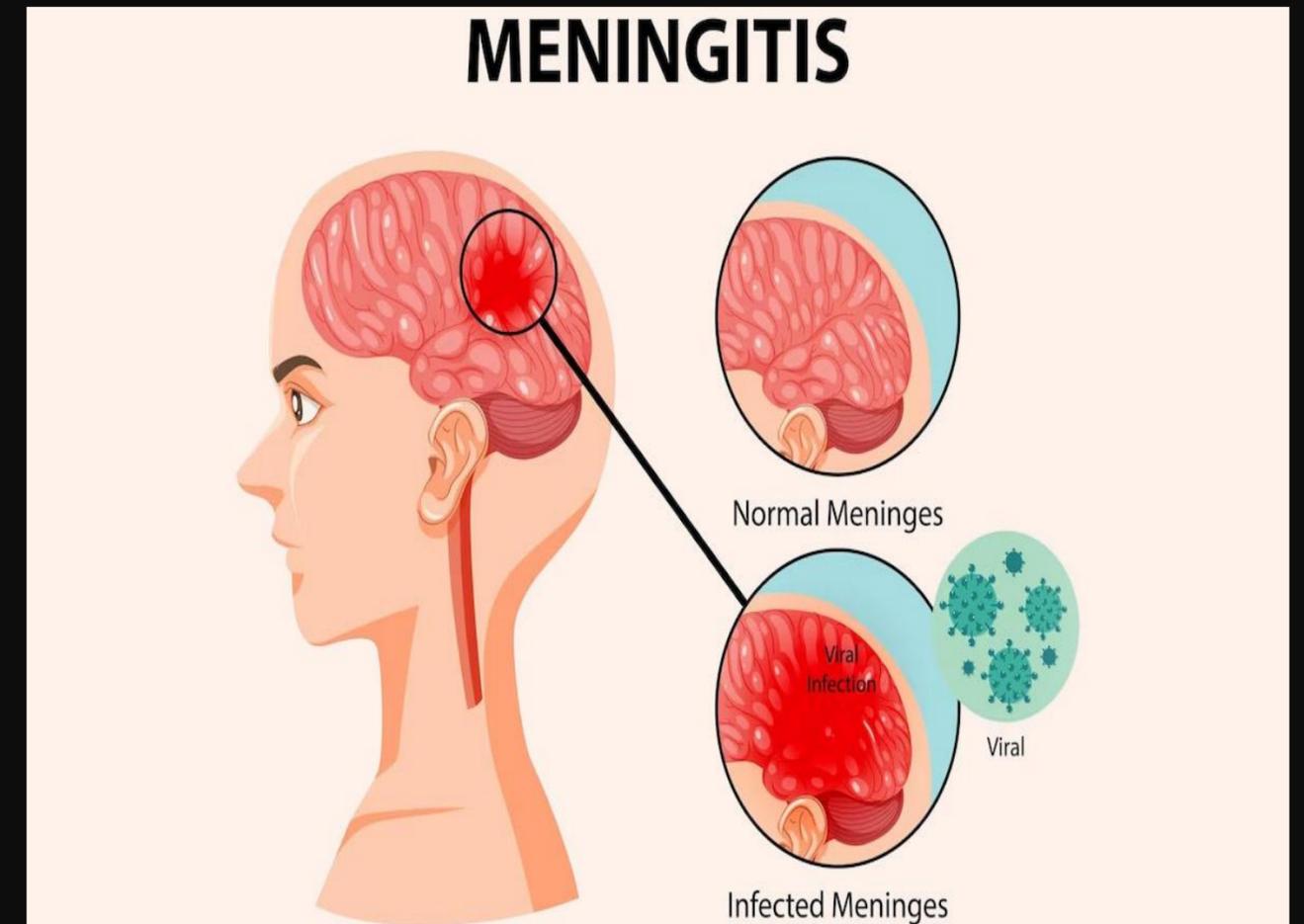
**World Health  
Organization**



- **2. महत्व:**
- हर साल टीकों की मदद से 14 से अधिक बीमारियों से लगभग 42 लाख लोगों की जान बचाई जाती है।
- टीके बचपन, किशोरावस्था और वयस्कता में गंभीर बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करते हैं।
- **4. वर्तमान स्थिति (2024):**
- खसरा के मामलों में 2023 में 20% की वृद्धि हुई।
- मेनिनजाइटिस और पीले बुखार जैसे रोग फिर से उभर रहे हैं।
- लगभग 1.45 करोड़ बच्चों को एक भी नियमित टीका नहीं मिल सका।



- **5. प्रगति के संकेत:**
- मेनिनजाइटिस A का कुछ क्षेत्रों से सफाया
- मलेरिया और HPV जैसी बीमारियों के लिए नए टीकों का विस्तार
- HPV वैक्सीन की कवरेज 21% से बढ़कर 40% (2020-2023)





- **चुनौतियाँ:**
- वैश्विक फंडिंग में कमी
- टीकों को लेकर गलत सूचनाएं और अफवाहें
- मानवीय संकट और युद्ध
- कमजोर स्वास्थ्य प्रणालियाँ
- महामारी के बाद नियमित टीकाकरण में कमी





- **भारत में प्रयास:**
- **मिशन इन्द्रधनुष:** 2014 में शुरू हुआ, उद्देश्य सभी बच्चों और गर्भवती महिलाओं को आवश्यक टीके देना।
- **UIP (Universal Immunization Programme):** भारत का सबसे बड़ा सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, जिसमें 12 बीमारियों के खिलाफ टीके शामिल हैं।



- यह रहा "मिशन इंद्रधनुष" का विस्तृत और उपयोगी हिंदी में नोट्स:
- मिशन इंद्रधनुष (Mission Indradhanush)
- परिचय:
- मिशन इंद्रधनुष भारत सरकार की एक प्रमुख स्वास्थ्य योजना है, जिसे 25 दिसंबर 2014 को शुरू किया गया था।
- इसका उद्देश्य 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों और गर्भवती महिलाओं को टीकाकरण के माध्यम से जानलेवा बीमारियों से बचाना है।





- **उद्देश्य (Objectives):**
- 1. 2 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों और गर्भवती महिलाओं को पूर्ण टीकाकरण कवरेज प्रदान करना।
- 2. उन बच्चों को टीके देना जो किसी कारणवश नियमित टीकाकरण से वंचित रह गए हैं।
- 3. 12 जानलेवा बीमारियों के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करना।

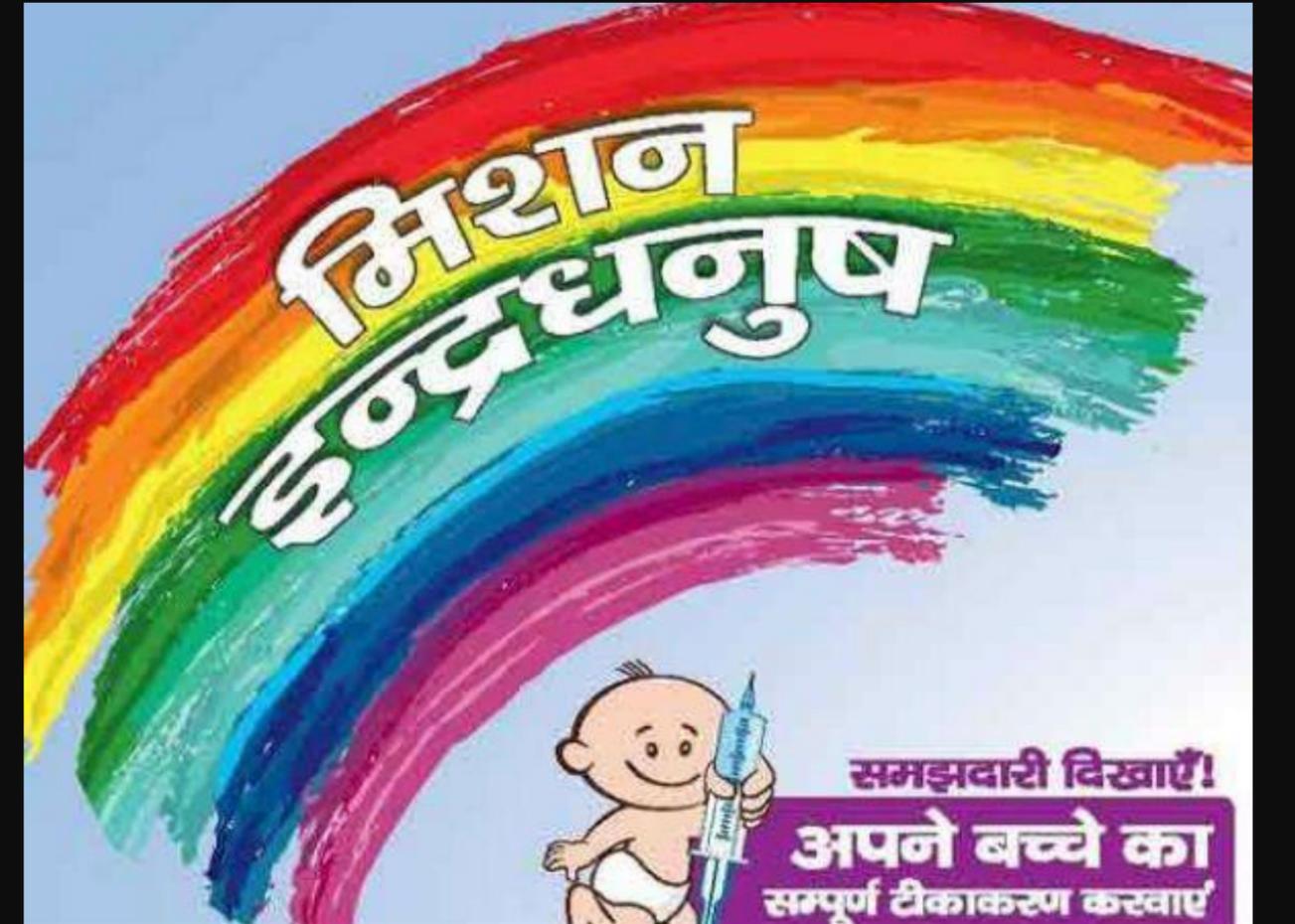




- कवरेज में शामिल बीमारियाँ:
- शुरुआत में 7 बीमारियाँ शामिल थीं, बाद में इसे बढ़ाकर 12 किया गया:
- 1. डिप्थीरिया
- 2. काली खाँसी
- 3. टिटनेस
- 4. पोलियो
- 5. क्षय रोग (टी.बी.)
- 6. खसरा
- 7. हेपेटाइटिस बी
- 8. हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा टाइप बी (Hib)
- 9. जापानी इंसेफलाइटिस
- 10. रेटावायरस
- 11. न्यूमोकोकल न्यूमोनिया
- 12. रूबेला



- प्रमुख चरण:
- 1. मिशन इंद्रधनुष (2014):
- टीकाकरण दर में तेजी लाने के लिए अभियान प्रारंभ।
- 2. इंटीसिफाइड मिशन इंद्रधनुष (IMI) – 2017:
- जिन क्षेत्रों में टीकाकरण दर कम थी, वहां केंद्रित प्रयास।





- **3. IMI 2.0 – 2019:**
  - स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करना और अंतिम छोर तक पहुंच बनाना।
- **4. IMI 3.0 – 2021:**
  - कोविड-19 के दौरान छूटे बच्चों को टीकाकरण से जोड़ना।
- **5. IMI 5.0 – 2023:**
  - डिजिटल प्लेटफॉर्म U-WIN के ज़रिए रजिस्ट्रेशन और ट्रैकिंग।





- **उपलब्धियाँ:**
- 2015-2020 के बीच टीकाकरण कवरेज में लगभग 6-10% की वार्षिक वृद्धि।
- मिशन इंद्रधनुष की मदद से कई जिलों में 90% से अधिक बच्चों को टीकाकरण मिल पाया।
- टीकाकरण कवरेज में असमानता को कम करने में मदद मिली।



- **चुनौतियाँ:**
- दूरदराज और आदिवासी क्षेत्रों तक पहुंचना।
- सामाजिक और धार्मिक भ्रांतियाँ।
- कोविड-19 के दौरान टीकाकरण में गिरावट।





- **सरकारी प्रयास:**
- ASHA और ANM जैसी फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं को अभियान में शामिल किया गया।
- स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा IEC (Information, Education, Communication) रणनीति को अपनाया गया।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे CoWIN और अब U-WIN का उपयोग।



**प्रश्न 1: मिशन इन्द्रधनुष के संदर्भ में निम्नलिखित में कौन-से कथन सत्य हैं?**

1. इसका उद्देश्य बच्चों और गर्भवती महिलाओं को वैक्सीन-रोकथाम योग्य रोगों के विरुद्ध पूरी तरह से टीकाकरण प्रदान करना है।
2. यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित है।
3. इसे 2014 में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया था।

**सही विकल्प चुनिए:**

- |           |              |
|-----------|--------------|
| A) 1 और 3 | B) 2 और 3    |
| C) 1 और 2 | D) 1, 2 और 3 |

उत्तर: A) 1 और 3

**स्पष्टीकरण:**

कथन 1 और 3 दोनों सही हैं।

कथन 2 गलत है क्योंकि यह योजना शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में लागू की गई थी।



सीताकली लोक कला

## सीताकली लोक कला



## Daily Current News

- **परिचय:**
- सीताकली भारत की एक पारंपरिक लोक कला है, जो मुख्यतः उत्तर प्रदेश के मऊ ज़िले में पाई जाती है।
- यह कला मिट्टी से बनाई गई सुंदर और रंगीन मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें धार्मिक, सांस्कृतिक और पौराणिक भावनाओं की झलक मिलती है।
- विशेषता यह है कि इसे केवल महिलाएं बनाती हैं।



- **मुख्य विशेषताएं:**
- **1. सामग्री:** सीताकली में उपयोग की जाने वाली मुख्य सामग्री है साफ सुथरी, महीन गीली मिट्टी (काली मिट्टी)।
- इस मिट्टी को 'सीताकली' कहा जाता है — यही इस लोक कला का नाम भी है।
- **2. रूप व आकृति:** मूर्तियाँ हाथों से आकार दी जाती हैं, बिना किसी साँचे के।
- मूर्तियाँ धार्मिक कथाओं से प्रेरित होती हैं — जैसे रामायण, महाभारत, देवी-देवता, और लोक देवियाँ।



- **3. रंग और सजावट:** मूर्तियों को प्राकृतिक रंगों से सजाया जाता है।
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध रंगों का ही प्रयोग होता है।
- **4. नारी सशक्तिकरण:** यह कला पारंपरिक रूप से महिलाओं द्वारा ही की जाती है, जिससे यह महिला सशक्तिकरण का प्रतीक भी बन गई है।
- इससे महिलाओं को आजीविका का साधन भी प्राप्त होता है।



- **5. प्रदर्शन का अवसर:** यह कला त्योहारों, मेलों और धार्मिक आयोजनों के समय अधिक सक्रिय रूप में दिखाई देती है।
- स्थानीय ग्रामीण मेले इसका प्रमुख मंच होते हैं।
- **वर्तमान स्थिति और संरक्षण:**
- यह कला अब लुप्त होने के कगार पर है।
- आधुनिकता, प्लास्टिक की मूर्तियाँ, और हस्तकला की उपेक्षा इसके प्रमुख कारण हैं।
- कई स्वयंसेवी संस्थाएं और राज्य सरकारें इसे पुनर्जीवित करने के प्रयास कर रही हैं।



## प्रश्न 2: सीता काली लोक कला के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. सीता काली कला पारंपरिक रूप से कागज, लकड़ी और कपड़े पर चित्रित की जाती है।
2. इस कला के चित्रों में प्रमुख रूप से धार्मिक पात्रों और समाज के नायक-नायिकाओं की छवियाँ होती हैं।
3. सीता काली चित्रकला में देवी सीता और देवी काली का समन्वय दिखाया जाता है, जो समाज में दोनों के समान सम्मान को दर्शाता है।

### सही विकल्प चुनिए:

- |                |                |
|----------------|----------------|
| A) केवल 1 और 2 | B) केवल 2 और 3 |
| C) केवल 1 और 3 | D) 1, 2 और 3   |

उत्तर: D) 1, 2 और 3

### स्पष्टीकरणः

कथन 1 सही है: सीता काली लोक कला पारंपरिक रूप से कागज, लकड़ी और कपड़े पर चित्रित की जाती है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में यह कला काफी प्रचलित है।

कथन 2 सही है: इस कला में प्रमुख रूप से धार्मिक पात्रों जैसे देवी-देवता, नायक और नायिकाओं की चित्रण होती है।

कथन 3 सही है: इस चित्रकला में देवी सीता और काली का समन्वय दर्शाया जाता है, जो समाज में उनके समान सम्मान और शक्ति को प्रदर्शित करता है।



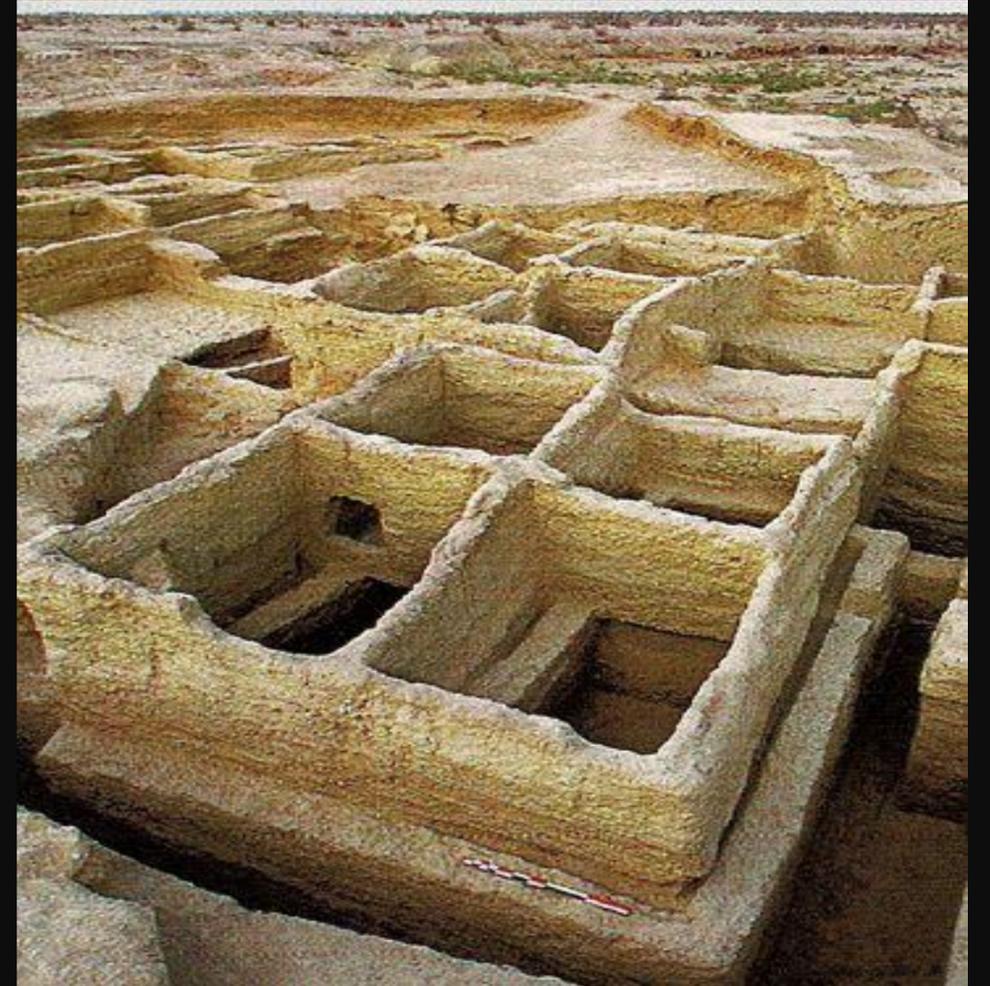
मेहरगढ़

# मेहरगढ़



## Daily Current News

- भारतीय उपमहाद्वीप की आदिकालीन सभ्यता का नगर
- स्थान और कालखंड
- मेहरगढ़ एक नवपाषाण कालीन (Neolithic) पुरातात्विक स्थल है, जो वर्तमान पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में बोलन दर्रे के निकट स्थित है।
- यह स्थल इंडस घाटी (हड़प्पा) सभ्यता से पहले की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृषि-बस्ती रहा है।

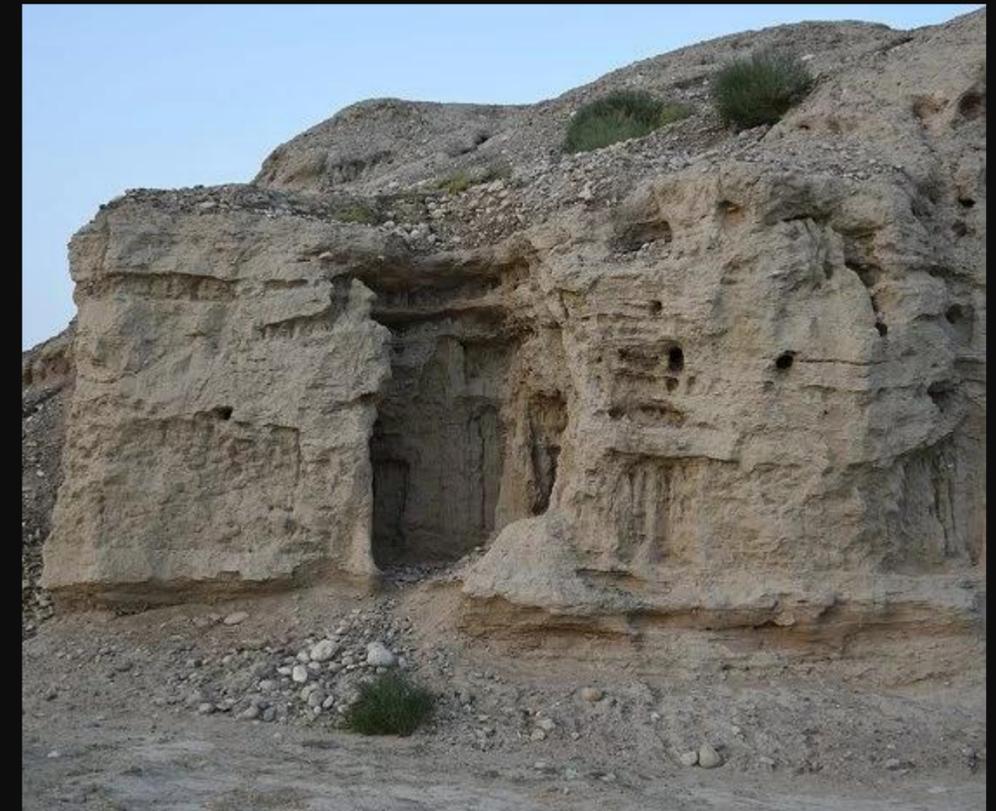


- नई रेडियोकार्बन स्टडी के अनुसार, मेहरगढ़ की बसावट का आरंभ अब लगभग 5200 ईसा पूर्व माना जा रहा है (पहले यह 8000 ईसा पूर्व मानी जाती थी)।
- इस संशोधित तिथि के निर्धारण में एक्सेलेरेटर मास स्पेक्ट्रोमेट्री (AMS) डेटिंग तकनीक का प्रयोग किया गया है।





- **इतिहास और समयावधि**
- मेहरगढ़ में लगभग 3000 वर्ष तक निरंतर मानव बसावट के प्रमाण मिले हैं, जो इस स्थल की ऐतिहासिक महत्ता को दर्शाते हैं।
- यह स्थल नवपाषाण युग से ताम्रपाषाण युग (Chalcolithic Age) तक का विकास क्रम दर्शाता है।



- **मुख्य विशेषताएँ और पुरातात्विक साक्ष्य**
- 1. प्रारंभिक कृषि और पशुपालन:
- यहाँ से गेहूँ और जौ की खेती तथा गाय, भेड़, बकरी और जेबू (कूबड़ वाला बैल) के पालन के प्रमाण मिले हैं।
- यह भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि और पशुपालन के सबसे प्रारंभिक साक्ष्य हैं।



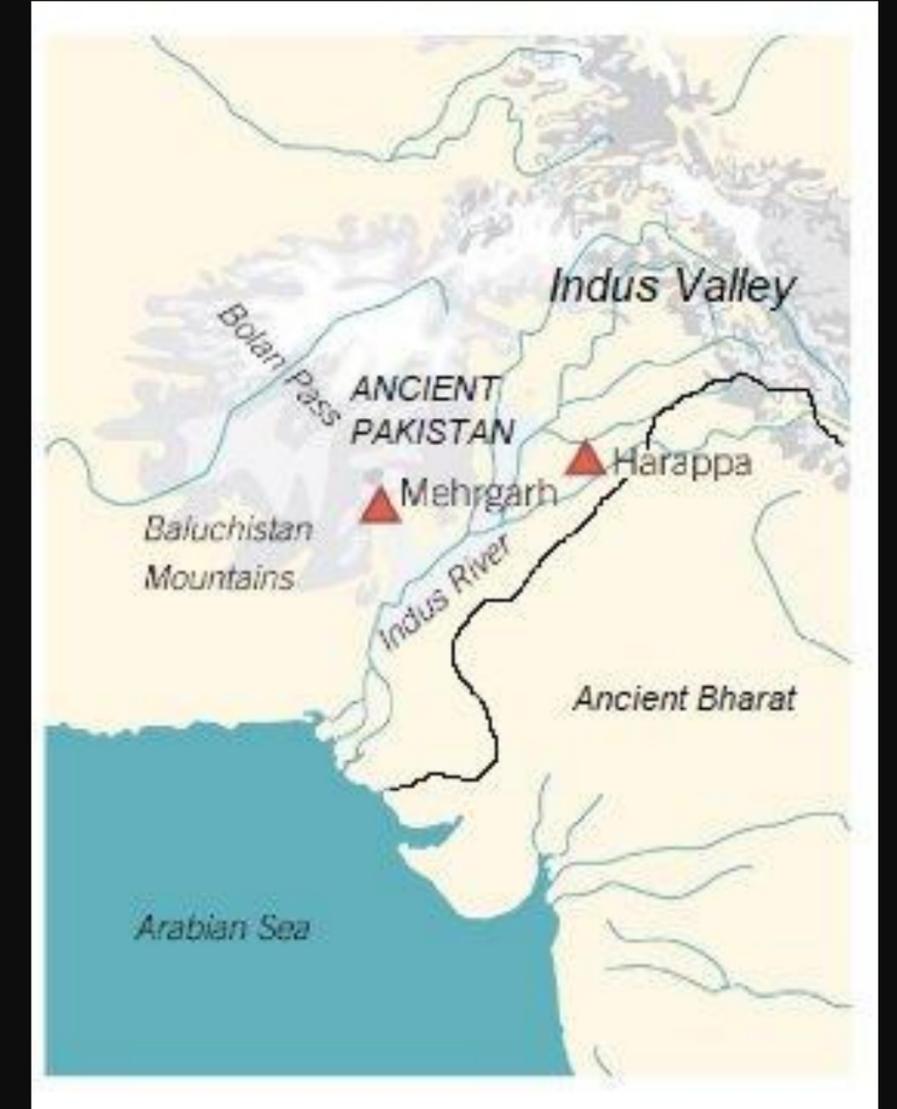
- **2. कपास के सबसे पुराने प्रमाण:**
- मेहरगढ़ से विश्व के सबसे प्राचीनतम कपास उपयोग के साक्ष्य मिले हैं, जो वस्त्र निर्माण के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है।
- **3. निर्माण शैली और जीवन शैली:**
- मिट्टी की ईंटों से बनी घरेलू संरचनाएँ (घर), शवाधान गृह (Burial Chambers) और भंडारण कक्ष पाए गए हैं।
- मृदभांड (Pottery): यहाँ से विशेष प्रकार के सजावटी मृदभांड मिले हैं, जिन्हें "तोगाऊ मृदभांड" (Togau Pottery) कहा जाता है।



- **4. मानव अवशेष और औजार:**
- इस स्थल पर खुदाई से मानव कंकाल, हड्डियों के औजार, पत्थर के उपकरण और आभूषण प्राप्त हुए हैं।
- शवों को कब्रों में दफनाया गया था, साथ में वस्तुएँ भी रखी जाती थीं – जो धार्मिक विश्वासों को दर्शाती हैं।



- **महत्व**
- मेहरगढ़ को भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि, कुम्हारी कला और सामाजिक जीवन की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है।
- यह स्थल हड़प्पा सभ्यता के सांस्कृतिक पूर्वज (Cultural Precursor) के रूप में देखा जाता है।
- एक्सेलेरेटर मास स्पेक्ट्रोमेट्री (AMS) डेटिंग एक उन्नत रेडियोकार्बन डेटिंग तकनीक है, जिसका उपयोग पुरातात्विक अवशेषों और जैविक नमूनों की उम्र का अत्यंत सटीक अनुमान लगाने के लिए किया जाता है।

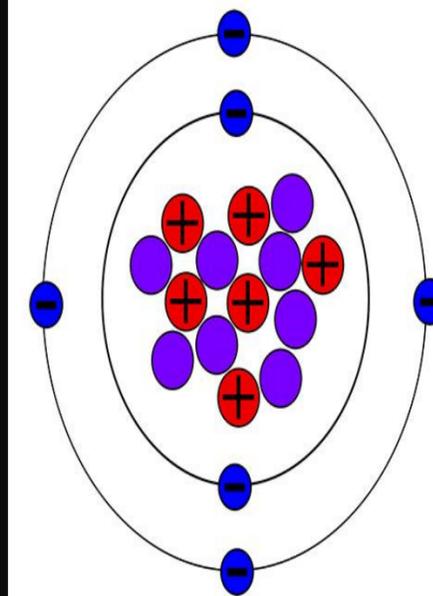


- **AMS डेटिंग: क्या है यह तकनीक?**
- **परिभाषा:**
- AMS (Accelerator Mass Spectrometry) एक ऐसी विधि है जो रेडियोसक्रिय कार्बन-14 (C-14) आइसोटोप की अत्यल्प मात्रा का भी पता लगाने और उसकी गिनती करने में सक्षम है, जिससे किसी जैविक वस्तु की उम्र का बहुत ही कम नमूने से सटीक निर्धारण संभव होता है।



- कार्यप्रणाली: कैसे काम करती है AMS डेटिंग?
- 1. नमूने की तैयारी:
- हड्डी, लकड़ी, बीज, कपड़ा या अन्य जैविक वस्तु से कार्बन निकाला जाता है।
- 2. आइसोटोप का पृथक्करण:
- Accelerator Mass Spectrometer मशीन में नमूने को डाला जाता है, जहाँ C-12, C-13 और C-14 आइसोटोप अलग किए जाते हैं।

## What is CARBON 14?



Carbon-14 (C-14) is a radioactive isotope of carbon, containing six protons and eight neutrons.

Formed naturally in the Earth's atmosphere through interactions with cosmic rays, **carbon-14** is incorporated into carbon dioxide and subsequently enters the carbon cycle.

The isotope undergoes radioactive decay over time, with a half-life of approximately 5,730 years. Carbon-14 dating is a widely used method in archaeology and geology, allowing the estimation of the age of organic materials by measuring the remaining C-14 in a sample, providing insights into past events and timelines.



- **3. C-14 की गणना:**
- AMS मशीन सीधे C-14 के परमाणुओं की गिनती करती है (जबकि पारंपरिक विधियाँ C-14 के क्षय की दर को मापती हैं)।
- **4. डेटा विश्लेषण:**
- C-14 की मात्रा के आधार पर नमूने की अनुमानित उम्र बताई जाती है (अधिक C-14 = नया, कम C-14 = पुराना)।



### ■ AMS की विशेषताएँ:

विशेषता	विवरण
अत्यधिक संवेदनशीलता	बहुत ही छोटे नमूनों (मिलीग्राम स्तर) पर भी कार्य कर सकती है
सटीकता	पारंपरिक डेटिंग की तुलना में कहीं अधिक सटीक
तेज परिणाम	परिणाम अपेक्षाकृत जल्दी मिल जाते हैं
कम प्रदूषण प्रभाव	आधुनिक संदूषण से कम प्रभावित होती है

- **AMS डेटिंग का उपयोग कहाँ होता है?**
- पुरातत्व (Archaeology): प्राचीन मानव अवशेषों, मिट्टी के पात्रों, स्थलों की तिथि निर्धारित करने में।
- पैलियोन्टोलॉजी: विलुप्त जीवों की हड्डियों के अध्ययन में।
- भूविज्ञान (Geology): पुराने भूस्तरीय परिवर्तनों का विश्लेषण करने में।
- जलवायु अध्ययन: प्राचीन वनस्पति, जीवाश्म, बर्फ की परतों के विश्लेषण में।



## मेहरगढ़



## Daily Current News

- **मेहरगढ़ में उपयोग**
- मेहरगढ़ की नई तिथि (5200 ईसा पूर्व) AMS डेटिंग द्वारा निर्धारित की गई है, जिससे पहले मानी गई 8000 ईसा पूर्व की तिथि की समीक्षा हुई है।
- यह तकनीक यहाँ से मिले बीज, लकड़ी या हड्डियों के नमूनों पर लागू की गई थी।

# मेहरागढ़



## Daily Current News

- मेहरागढ़ और AMS डेटिंग से संक्षिप्त (शॉर्ट नोट्स)
- मेहरागढ़: भारतीय उपमहाद्वीप की आदिकालीन सभ्यता का नगर
- स्थान:
- बलूचिस्तान (पाकिस्तान), बोलन दर्रे के निकट
- नवपाषाण कालीन स्थल

# मेहरगढ़



## Daily Current News

- **कालखंड:**
- नई AMS डेटिंग के अनुसार: 5200 ईसा पूर्व से
- पहले माना जाता था: 8000 ईसा पूर्व
  
- **महत्व:**
- हड़प्पा सभ्यता से पूर्व की प्रमुख कृषि-बस्ती
- लगभग 3000 वर्ष तक निरंतर मानव बसावट

# मेहरगढ़



## Daily Current News

- **मुख्य विशेषताएँ:**
- **1. कृषि और पशुपालन:**
- गेहूं, जौ की खेती
- गाय, भेड़, बकरी, जेबू के पालन के प्रमाण
  
- **2. कपास के साक्ष्य:**
- विश्व का सबसे प्राचीनतम कपास उपयोग

## मेहरगढ़



## Daily Current News

- **3. निर्माण शैली:**
  - मिट्टी की ईंटों के घर
  - शवाधान गृह, भंडारण कक्ष
  - तोगाऊ शैली के मृदभांड
- **4. अन्य साक्ष्य:**
  - मानव कंकाल, औजार, आभूषण
  - कब्रों में वस्तुओं के साथ दफन – धार्मिक विश्वास
- **महत्वपूर्ण तथ्य:**
  - कृषि, कुम्हारी कला, सामाजिक संरचना का प्रारंभिक रूप
  - हड़प्पा सभ्यता का सांस्कृतिक पूर्वज



- **AMS डेटिंग (Accelerator Mass Spectrometry)**
- उद्देश्य:
- जैविक नमूनों की उम्र का अत्यंत सटीक निर्धारण
  
- **तकनीक:**
- C-14 परमाणुओं की प्रत्यक्ष गिनती
- बहुत कम मात्रा में भी सटीक परिणाम

# मेहरगढ़



## Daily Current News

- **प्रक्रिया:**
  - 1. नमूने की तैयारी (हड्डी, बीज, लकड़ी आदि)
  - 2. आइसोटोप का पृथक्करण
  - 3. C-14 की गिनती
  - 4. डेटा विश्लेषण
- **उपयोग:**
  - पुरातत्व, भूविज्ञान, जीवाश्म, जलवायु अध्ययन
  - मेहरगढ़ में उपयोग:
    - AMS तकनीक से नई तिथि (5200 ईसा पूर्व) निर्धारित की गई

- **प्रश्न 1: मेहरगढ़ पुरास्थल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:**
- 1. यह भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि और पशुपालन की सबसे प्रारंभिक साक्ष्यों में से एक है।
- 2. यहाँ मानव अस्थियों के साथ-साथ दाँतों की सर्जरी के प्रमाण भी मिले हैं।
- 3. यह स्थल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा खोजा गया था।
- सही उत्तर चुनिए:
- A. केवल 1 और 2
- B. केवल 2 और 3
- C. केवल 1 और 3
- D. 1, 2 और 3

- सही उत्तर: A. केवल 1 और 2
- **व्याख्या:**
  - कथन 1 सही है: मेहरगढ़ भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे
  - प्रारंभिक कृषि और पशुपालन के साक्ष्य देता है (लगभग 7000 ई.पू.)
  - कथन 2 सही है: मेहरगढ़ में एक व्यक्ति के दाँत में
  - प्राचीन दंत-चिकित्सा (dental drilling) के प्रमाण मिले हैं जो मानव इतिहास में पहली सर्जरी मानी जाती है।
  - कथन 3 गलत है: मेहरगढ़ की खुदाई फ्रांसीसी पुरातत्वविदों द्वारा की गई थी, न कि ASI द्वारा।

- **प्रश्न 2: मेहरगढ़ के बारे में निम्न में से कौन-से कथन सही हैं?**
- 1. यहाँ से अनाज संग्रहण के लिए मिट्टी के बने भंडारण पात्र मिले हैं।
- 2. यहाँ से मृतकों के साथ वस्तुएँ (जैसे आभूषण) दफन करने की परंपरा दिखाई देती है।
- 3. यह स्थल सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राचीन और उसका अग्रदूत (precursor) माना जाता है।
- 
- **उत्तर विकल्पः**
- A. केवल 1 और 2
- B. केवल 2 और 3
- C. केवल 1 और 3
- D. 1, 2 और 3

- सही उत्तर: D. 1, 2 और 3
- **व्याख्या:**
  - कथन 1 सही है: मेहरगढ़ में मिट्टी के भंडारण पात्र पाए गए, जिनमें अनाज रखा जाता था यह कृषि की पुष्टि करता है।
  - कथन 2 सही है: यहाँ मृतकों को कब्र में दफनाने की परंपरा थी और उनके साथ वस्तुएँ (जैसे मनके, आभूषण) भी दफन की जाती थीं यह सामाजिक-सांस्कृतिक विकास का संकेत है।
  - कथन 3 सही है: मेहरगढ़ को अक्सर सिंधु घाटी सभ्यता का अग्रदूत माना जाता है क्योंकि यहाँ कई प्रारंभिक विशेषताएँ मौजूद थीं जो आगे चलकर हड़प्पा संस्कृति में विकसित हुईं।



Thank  
you

